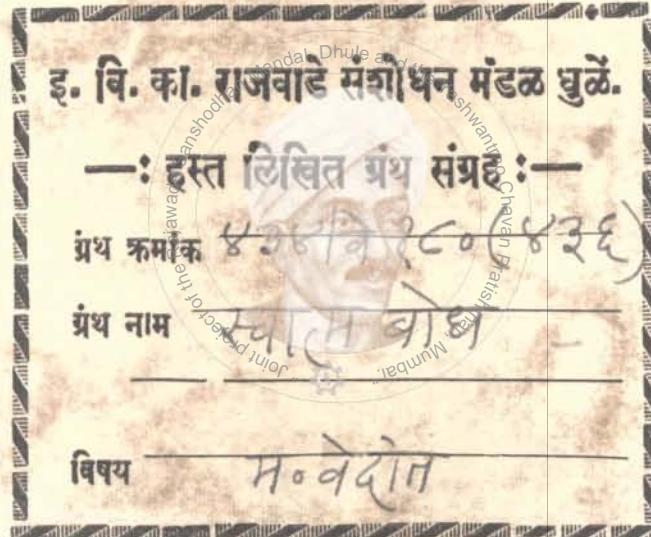


इ. वि. का. राजवाडे सशीधन मंडळ घुळे.

—१०८३४२० (४३६) —

ग्रंथ क्रमांक ४३६
ग्रंथ नाम राजवाडे बोध

विषय म० वेदोत्तम



तोकायेदुःखे॥१२०॥वथवासेघेइष्टजेठले॥येकेंयेजसुखःपा
वले॥तरिदेखयाभानासिजाहाले॥कायेलाभतेथ॥१२१॥तै
साहानलिपेसर्वा सि॥पापपून्यकैचेया सि॥सर्वयानपवेबं
धनासि॥मामोक्तकेंचा॥१२२॥येकहेसेंबोलति॥पीडिबाहां
उयेकीचिस्तिति॥तरिदेवांवधिकशक्ति॥मनुजान्यन्य
॥१२३॥क्षणोंगोवधन्तुचलिका॥येरांगोठनवजायेलाई
ला॥तरिहेक्ययथाबोला॥केविघडि॥१२४॥आतांयेअ॥
चिदष्टांनु॥दक्षतरियेजसिअस्तनु॥खोउस्तुछनहाल
त॥नागाचेनि१२५॥पुढेखांदियांसि॥भीजतावधिक
वसेटांसि॥तरिकायथाननामबोला सि॥फावोंझके
॥१२६॥वथवायेकहेसेंपुस्ते॥जेंसर्वहियेकचिअसे॥त
रिअंजरनमरेमनुभ्यों॥ठाजातभणि॥१२७॥पीपलिके

बोध

वरिपुत्रं च रघु ॥ तत्काल तजितेषागा ॥ नानासंबटनिन
पवलिमरगा ॥ पशुनर ॥ १२८ ॥ कायकरणे अर्थ कीसि ॥ तरिप
नियेसाद्विष्टांतासि ॥ दिपहोतां बातस्पर्शी ॥ वत्काळा नाशे ॥
॥ १२९ ॥ तोविवशिस्य किर्णियवन ॥ स्पर्शीहोये दिप्यमान ॥
गरिपवत्तागिपावकभिन्न ॥ जस्तेकाये ॥ १३० ॥ तैसेंजया
चैस्त्वुलज्ञारि ॥ तैथैस्ताज्ञा क्षिक्षालकार ॥ १३१ ॥ पा
धि च वल्लुथोर ॥ आत्माजैसावैसा ॥ १३२ ॥ विरं विपिप
लिकैयनियेत ॥ ज्ञानयेकान्तिभनुशुत ॥ जेंजेंकर्त्तुत्तेत
जाजिवंतयासा दिरवीच ॥ १३३ ॥ जनकन्तपपणेंभोजीतां
त्रिगुनईं दियेवंवहुता ॥ साक्षिलेपावल्लावेत्तौत्वा ॥ नरोत्तम
॥ १३४ ॥ श्रीकांकनक दिसंकात ॥ सेत्तिंजाजिवेचाविचा
र ॥ कर्त्तुत्ताचावेहात ॥ भणेमिवेगङ्गा चिं ॥ १३५ ॥ तमा

॥ १३० ॥

॥ १३१ ॥

चागुणसंकारण॥तेतरिप्रेमाचेंनिकारण॥जंकरतयाचेंक
 रण॥परिमुषोमिदृष्टा॥१३५॥ब्रह्मारजोगुणेंशृष्टिकरि॥प
 रिष्वकर्तोनिधीरीं॥हेन्दुणाचेंगुणकरि॥मिसाक्षित्येंवेगला
 ॥१३६॥तैसेंचिविष्णुपासुनिहोत॥सेस्विंहोयेतयातीत॥हें
 सकल्लिसत्त्वजकरि॥मिसाक्षियाना॥१३७॥ताचिहावव
 याचमल्कार्॥पाठविल्लादुवीहीवाजागत्॥येमुनेन्यावोसरावा
 पुत्॥बोलतिष्ठंगना॥१३८॥लष्णबालब्रह्मव्यापि॥तदि
 नुवोसरस्तुकरि॥मार्गदिधल्लाङ्गवकरि॥पावल्यापेल्लति॥
 ॥१३९॥याचाहेसाज्जिप्रावह॥रतिमहनाचेंवैकृव॥तथा
 हेखणाकेराव॥लिपेकेवि॥१४०॥तैसेंचितयाचेंकृतर॥इ
 लुकेभक्तुनियानीराहार॥मार्गदिधल्लासत्तर॥याबोलाव
 वरी॥१४१॥अभिषावोहेसायाचाकृधानषाभाग्नप्राणाचा॥

(24)

आपण साक्षी या चा ॥ भ्रंजो नियां ॥ १४२ ॥ त्वा तां हि रघ्यमय
 पुत्रष ॥ ब्रह्मा विष्णु तदेत्या चैत्रोऽन् ॥ तथा स्त्रिप्रसवल्लापरेष
 लिंगेनातो ॥ १४३ ॥ जेत्रैकर्त्त्वा चिगति ॥ ब्रह्मा हि तद्विरच्या
 ती ॥ हेमाया असे करीती ॥ भ्रंजो निजागतातो ॥ १४४ ॥ या ला
 गिआपण चिजाहला ॥ सकल हि आपण चिकर्त्तलागला ॥
 बोल्ल ऐतु ने हिटा दुङ्गा ॥ भ्रंजो मि साक्षी ॥ १४५ ॥ ते यें चिजागता
 तथा चाल्लभीमा निविष्णु सुरं ॥ भ्रंजो हें विरं चिकरित ॥ भ्रंजो
 निजागे ॥ १४६ ॥ लिग हेन ते थी चाय ॥ विष्णु अभिमानि साचा ॥
 हि रघ्य देख आहु रिचा ॥ भ्रंजो निवेग ल्लातो ॥ १४७ ॥ तस्तो मुखी
 तद्वसंकूरण ॥ हेसुषु प्रिते शिळसरवुण ॥ आपन तथा चाजा
 जा ॥ भ्रंजो नित्तै वेग ल्लातो ॥ १४८ ॥ यवं सकल स्वभावा सि ॥ वि
 राट जागे सर्वां सि ॥ भ्रंजो निन लिपे कर्त्त्वा सी ॥ पुत्रषतो ॥ १४९ ॥

(3)

१११

१११

तैसिचपिंडुगति॥ जामातरिसर्वभुति॥ नसंडिसाक्षखानिसंगती॥
वेगच्छालसे॥ १५०॥ पुकषीमाघेन्सानिरास॥ पिंडिश्विद्ये
चाह्नास॥ उभयतासाक्षित्वेंसौरस॥ सहजविहेक्ष्य॥ १५१॥ मा
जेचेंकरणेंहेसें॥ यक्षिपतिभाति सें॥ पूजषासिल्लाविलेंवि
सें॥ प्रापुलेनिबद्धें॥ १५२॥ प्रथममाघेसुन॥ पंचभुतेंजाहलि
निमीज॥ परिभाकाशापासुनिविलक्षन॥ पवनद्विवसे॥ १५३॥ प
वनव्याल्लाहुतानानास्ति॥ घउठिलात्तानाकास्ति॥ तोव्याल्लाजि
वनास्ति॥ पविष्टनसातिखें॥ १५४॥ जिवनापास्तुनिजन्म॥ पृथी
हेसेंजाहलेनाम॥ तेजउज्ज्यत्वेंभीसिम॥ दिस्तत्तमे॥ १५५॥
परिमायावसेंतोचिनटक्का॥ लटिकान्वि + रवेष्ठज्ञारंभिला
से॥ रिहोउनिल्लाउरलोपवेगच्छान्वि॥ १५६॥ येकांविहेसिवृ
द्धी॥ जेलसाविनिवीकिल्ल्यसमाध्यही॥ तदिचबोलिजशान
सिझीहेसेमना॥ १५७॥ मतमतंतरेमार्गी॥ ब्रह्मीउपाधिनसाह

(3A)

अनेग॥तेसमाधिचेंवंग॥तेथेंतोनातछे॥१९५८॥समाधिभूनि
 जेमनसमाधान्॥तथाराहेद्व्याहोडन॥समाधिष्यथवाव्यस्स
 माधान॥हेधर्मसनाचे॥१९५९॥तथापिसागेंडन्मनि॥गुजरां
 प्रदायेंकजनि॥क्षिष्या च्यामार्थोडनिपाणि॥उपदेशमा
 र्गी॥१९६०॥नामगुणदृश्यकांगुणातित॥वत्तद्वाटतिसांगे
 लपावंत॥नक्केतरिज्ञात्तिपात॥द्वच्छिकदि॥१९६१॥तैसाज
 नुभवैठकेसा॥नकेसुप्तिहेसापकरणि विजपावेठसा॥उमतु
 वत्॥१९६२॥जैसेंठन्मुत्तद्व्यभविलें॥नजांकोनिन्त्रैश्वाविले
 सवींगजो घनपावलें॥जुडवत्॥१९६३॥सर्वठिरातिरविकल्प
 पादपाणि चलचल॥जीकाकिंचीत्वेंवल॥हेसिद्धा॥१९६४
 महतीमात्रजाल्यांहेसे॥माणि जेचैतन्यवोत्तलेमुसे॥साक्ष
 विठसावोनिवसे॥सर्वीमाजी॥१९६५॥हेसकरितोकज्जा॥निर्गुण
 तोजानालासाकाज्जा॥तेनेंतारिलेचनाचर॥संजयोनानि॥१९६६॥

वच्चंगज्जन्वें वोखटे ॥ कठिंचकठुवटनवटे ॥ आपुछेनिमने
चाखें मगळविमानी ॥ १८३ ॥ पुत्रहारादिसंसार ॥ सर्वप्रपं
चादिरानिर ॥ इनुकें वर्षु निया सागर ॥ उळघिजेभव ॥ १४ ॥
साडु निवहंकारें घर ॥ इष्टवें राहे निरंतर ॥ आपुल्या
स्वार्थीला गिस्त्वर ॥ ज्ञजेञ्जन्जि ॥ १८४ ॥ विस्त्वासफळला
बाक्षा स्ति ॥ भग्नो नियानभजेभलवया स्ति ॥ जो लाछु निरे
अनुभवासी ॥ तो चिक्कुस ॥ १८५ ॥ हेलतीं पाव स्तिसुक्ति ॥ हे
अप्पलटी की चशुनि ॥ जितां चिनयेप्रतीती ॥ तदिस
कळहिमि अथा ॥ १८६ ॥ वच्चनमा त्रेंमुक्तप्ति ॥ पाहिजेस
विनिराळहोउन ॥ तया चेवं दिजेचरेज ॥ तोऽस्त्रिष्युत्तम
॥ १८७ ॥ हैं कांचें हेसेमत ॥ ब्रह्मयेक अनुशुत ॥ गुत्तिष्य
नैमस्त ॥ कवलकवणाचा ॥ १८८ ॥ तो धर्तनियोहोर ॥
चढतहोतगिरिवर ॥ पावल्यां साठीं सत्तर ॥ केलाचा

Digitized by srujanika@gmail.com

बोध ॥

तु अपवानि ॥ १८७० ॥ किं निधान पठलि थां दृष्टि सि ॥ सत्त्वर
झाकि क्लें ने त्रा सि ॥ मग पाव लाइ निश सी ॥ अभाग्य दै ॥ १८७० ॥
है सागतां दृष्टि तु ॥ बन थवा ठेल बहु तु ॥ धर्न नियां अनुभव
शबु ॥ पाव तिव ल्ल ॥ १९७१ ॥ पाता हो गुर्ज चं महिमान ॥ है किल
सा निशां वेग छे पण ॥ मागे साहि ल पाप पुछ्य ॥ सहजे निशु
ति ॥ आतां तो दुं संशया सी ॥ निवीकि ल्य भृषि जो का ॥ १९७१ ॥
स यासा ॥ जो है ख ला या सर्व सी ॥ तो क ल्य ना तीत ॥ १८७० ॥
संक ल्य वि क ल्य है का ॥ १९७१ ॥ मना चैक र छों जाणा ॥ आत्मा यां है
ख गे पण ॥ सहज नि वि क ल्ल ॥ १९७१ ॥ आतां सा गो प्राकृत
जाण गो तै ब्रह्म स थां ॥ हैं गे हैं सांगीत ले नि श्रीत ॥ है ईन दि
व्य दर्थी ॥ १९७१ ॥ श्रे छि श्रे ष्ट श्री शोक ज ॥ वसि ष्ट शा नियां
सा चार ॥ ते करि त व सति नि धीत ॥ आपार का स यापे ॥ १९७१ ॥

Digitized by sashodhar mandal, Bhule in the Rashtriya Sanskrit Sansthan Library, New Delhi

(5)

(54)

निर्विकल्पतामण ति माँद तो सि ॥ जें बाढ़ठुन सावामानसी
तरि हे सिग तिकव जासी ॥ जाहा लिहो ती ॥ १७७ ॥ शुकमुख
भागवत निरोपण ॥ वज्जिछें प्रबोधि लावेह निरमण ॥ रामेवं
घिलारावण ॥ नानु राम्भी ॥ १७८ ॥ याशवच्चीपुर्णग्रहस्त ॥
फाव्वुण योहा छंकुन ॥ नारदपृथि ठिंडत ॥ जनकराज्यक
नि ॥ १७९ ॥ सहजसमाधी तेहे सि ॥ जें विसरनपदावावस्तु
सि ॥ रन्धे रवणें सर्वांसि ॥ तेगेतेसमाधी ॥ १८० ॥ सर्वहिना
तालियां चैतन्य ॥ पुटें कोणसमाधान ॥ जें थेमाळवकें मिठुंपण
तेविसमाधि ॥ १८१ ॥ आपण आपण यां देरवनु ॥ आश्ची र्घवितासी
वाटत ॥ भरलेसहोहित ॥ दुकाळकेचा ॥ १८२ ॥ व्याष्यआषि
व्याषक ॥ हेनिंगावच्चले साम्यक ॥ तोइष्टातेनावेक ॥ सं

गेनमि ॥२७५॥ गोधमना मप्रथमस्याचेंजातलयांच्येक
 मी॥ गोधमपणनिस्मि॥ बुडलें ॥२०४॥ तेचिकणिकनामजा
 तलें॥ तयेचेपाकव्याइक्षिलें॥ तेहिनामविरालेंजातलीपव्या
 न्तें॥२०५॥ पक्षाज्ञेहोतांउदरगतपंजेहोयतेंजगातेंकछत॥
 तयामव्याचिस्तिकालेत ॥ संशयोनाहि ॥२०६॥ विजपउलेंपं
 खुभिल्यांत ॥ मोउहेसेनामपावत ॥ मोउपगाहिनीमता ॥ जात
 लाउपान्दा ॥२०७॥ मगतिनकेंमानेंराहिलेंपुढेर्शार्थापल्लव
 हैसेनामजातलें ॥ पुष्यावरि विजव्यालेंबुडलाटक्षा ॥२८
 अथवाकनकार्चेऽर्थलेंकार ॥ नानानामिपरिकर ॥ पुजारपि
 भाटणिनिधीर ॥ सुवर्णीस्त्रियसे ॥२०८॥ किंच्छताचिपुत्रजी
 अवेविपुर्जत्वपानलि ॥ अवेवउपग्यिनामिवेगजी ॥ परनुच्छ
 त ॥२९०॥ किंलेजेंनिकोरिलापर्वैठ ॥ तपेतरिवजेकारिस्तुम्

Raiawade S. Shodhan Mandal, Dhule and the
 "Royal Library of the
 State of Maharashtra"



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com